eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

रामकथा का वैश्विक सन्दर्भ

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह
[1]एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

विद्वानों ने विश्व स्तर पर तीन कथानकों को सबसे ज्यादा प्रभावशाली माना है। ये कथानक हैं– रामकथा, सीजर तथा क्लियोपेट्रा की कथा एवं रुस्तम–सोहराब की कथा। इन कथाओं का उद्भव स्थल क्रमशः भारतवर्ष, रोम–मिस्र तथा फारस (पर्शिया, वर्तमान ईरान) रहे हैं। परन्तु व्यापकता, विविधता की दृष्टि से इन तीनों विश्व स्तर की कथाओं में भी 'रामकथा' प्रत्येक दृष्टि से सर्वोपरि सिद्ध होती है।

Keywords- रामकथा का वैश्विक सन्दर्भ, भारतीय वाङ्मय एवं जनमानस।

Introduction

व्यापकता की दृष्टि से रामकथा ने विश्व मानचित्र के प्रायः दो तिहाई भूभाग को आत्मसात कर रखा है। प्राचीन मिस्र, रोम तथा एशिया माइनर से लेकर वियतनाम (चम्पा) कम्बोडिया (कम्बुज) तथा सुवर्णद्वीप (इण्डोनेशिया) तक का क्षेत्र आज भी कदाचित् रामायण संस्कृति से प्रभावित है। रामकथा के इस कालजयी महाप्रभाव को देखकर ही श्री पेराला रत्नम् जी ने, जो कि अमरीका, चीन, लाओस तथा इण्डोनेशिया में भारत के राजदूत रहे, प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू के समक्ष Ramayana Commonwealth की संस्थापना का प्रस्ताव रखा था। श्री रत्नम् का विश्वास था कि ब्रितानी शासन से जुड़े राष्ट्रों की संस्था British Commonwealth की ही तरह रामायण संस्कृति से जुड़े राष्ट्रों की यह संस्था उनके पारस्परिक हितों की रक्षा करने तथा राजनयिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने में समर्थ होगी। किन्तु, नेहरू जी ने प्रस्ताव को प्राथमिकता नहीं दी । काश, यही प्रस्ताव महामहिम सरदार वल्लभ भाई पटेल के समक्ष उपन्यस्त हुआ होता तो Ramayana Commonwealth संयुक्त राष्ट्र संघ से भी कहीं अधिक तेजोदीप्त, सर्वमान्य संगठन बन जाता और विश्व स्तर पर रामराज्य की संस्थापना की संभावना निश्चय ही बढ़ जाती।[1]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

भारतीय कालगणना के मानदण्ड अत्यन्त विज्ञान सम्मत हैं। यह बात और है कि सहस्राब्दियों की दासता ने हमारे ज्ञान, विज्ञान की, हमारी अनन्य विविध उपलब्धियों को या तो 'अमान्य' सिद्ध कर दिया है अथवा अपनी थोथी मान्यताओं से विवादास्पद बना दिया है। दुर्भाग्य का विषय है कि निरंकुश तथा सर्वतंत्र–स्वतंत्र होते हुए भी हम आज भी बौद्धिक दासता का कंचुक ओढ़े हुए, मूर्खों की तरह यही वाक्य दुहरा रहे हैं कि रामायण–संस्कृति मात्र 240 वर्ष ईसा पूर्व की है। हड़प्पा के अवशेषों में रामायण–संस्कृति का कोई प्रमाण नहीं मिलता। फलतः उसका अस्तित्व संदिग्ध है। महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के विषय में अभी भी हम मैकडॉनेल की ही युक्ति दुहरा रहे हैं 'He was a legendary personality. He was only the reteller of tales'

मेरा ऐसा विश्वास है कि यही उचित अवसर है कि जब भारत की तर्कसम्मत, विज्ञानसम्मत एवं तपस्सिद्ध उपलब्धियों, परम्पराओं की नये सिरे से प्रतिष्ठा की जानी चाहिये तथा विदेशी विद्वानों की एकांगी, निर्मूल, दुर्भावनाग्रस्त तथा भ्रान्त धारणाओं को हमेशा के लिये भारतीय वाङ्मय एवं जनमानस से बहिष्कृत कर देना चाहिये। भारत की स्वतंत्रता तभी सार्थक सिद्ध होगी, अन्यथा कहने को हम तो स्वतंत्र हैं, परन्तु हमारा साहित्य, हमारा धर्म, हमारी संस्कृति–तीनों आज भी पराधीन हैं। बिना ईस्वी सन् की लक्ष्मणरेखा के तिरस्कृत किए हम भारत के गौरवमय अतीत के साथ न्याय नहीं कर पाएंगे।

भारतीय परम्परा के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने 24वें त्रेतायुग में अवतार लिया। इसके पोषक प्रमाण हमें वायु, ब्रह्माण्ड, हरिवंश पुराण तथा महाभारत में उपलब्ध होते हैं–

'त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपशः क्षयात्।

रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान्।।' – वायु0 70.48

'चतुर्विंशे युगे वत्स त्रेतायां रघुवंशजः।

रामो नाम भविष्यामि चतुर्व्यूहस्सनातनः।।' – ब्रह्माण्ड 2.3.36.30

'चतुर्विंशे युगे चापि विश्वामित्रपुरस्सरः।

लोके राम इति ख्यातस्तेजसा भास्करोपमः।।' – हरिवंश 22, 2.46

'सन्धौ तु समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

रामो दाशरथिर्भूत्वा भविष्यामि जगत्पतिः।।' – महा0 शान्ति 9 .384, 19

आधुनिक इतिहासकारों को यदि राम की यह जीवन–तिथि उपहासास्पद भी प्रतीत होती हो तो उनकी प्राचीनता में तिलमात्र सन्देह नहीं किया जा सकता है। सौभाग्यवश प्राचीन मिस्र के राजवंशों का शिलोत्कीर्ण इतिहास, ईसा से 572 वर्ष पूर्व प्राचीन आज भी सुरक्षित है। इतिहासकार बोकह के अनुसार मिस्र के प्रथम शासक मन (ग्रीक मैनस्) ने ई0पू0 5702 वर्ष में यहाँ राज्य किया। अन्य ऐतिहासिक यह तिथि ई0पू0 5613 वर्ष मानते हैं।[2] मन अथवा मनु के अनन्तर 18 वंशों के नरपतियों ने मिस्र में शासन किया। ये सभी शासक स्वयं को 'र' अथवा 'सूर्य' कहते थे।

सम्राट अमन होतप ने 'अल्पनतन' (सूर्यप्रकाश) उपाधि धारण की तथा क्रमांक में अतन देवता (सूर्य) का विशाल मन्दिर बनवाया। ई0पू0 1100 वर्ष में मिस्र का सम्राट् था हरिहर, जो कि सम्राट रामससु (त्रयोदस) का अन्तरंग था। सस का अर्थ है चन्द्र। वस्तुतः यह 'शशि' शब्द का ही मिस्रभाषान्तर है। इस प्रकार रामशशी का अर्थ है रामचन्द्र। मिस्र की शासन परम्परा में 'रामचन्द्र' नामक तेरह सम्राट् हुए, जिनमें प्रथम रामचन्द्र का समय ई0पू0 1500 वर्ष माना जाता है। इसने 'रमापति' की उपाधि धारण की थी।

यह विवरण अनपेक्षित भले प्रतीत होता हो, परन्तु इसे उद्घृत करने का मेरा एक मात्र उद्देश्य यही है कि ई0पू0 1400 से 1500 वर्ष के बीच मिस्र में तेरह रामचन्द्र राज्यासीन हुए। इतना ही नहीं, प्रत्युत मध्य एशिया के आर्यवंशीय मितानी राजवंश में भी सम्राट दशरथ हुए। इसका सुस्पष्ट अर्थ यही है कि ईसा से प्रायः डेढ़ हजार वर्ष पूर्व ही रामकथा मिस्र के जनमानस में व्याप्त हो चुकी थी। रामचन्द्र नाम की इस लोकप्रियता से यह भी ध्वनित होता है कि भारतभूमि में अवतीर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का प्रजाराधक पावन चरित सम्पूर्ण पश्चिम एवं मध्य एशिया में स्पृहणीय बन गया था।

रामकथा की व्यापकता का यह था पश्चिमी छोर। सुदूरपूर्व में भी राम कथा ईसा की प्रारम्भिक शतियों में ही प्रतिष्ठित हुई। वृहत्तर भारत–विषयक विस्तृत जानकारी हमें मुख्यतः चार स्रोतों से प्राप्त होती है–भारतीय, चीनी, यूनानी तथा अरबी स्रोत। पुराणवाङ्मय, रामायण–महाभारत, वृहत्कथा के परवर्ती संस्करण, महावंश, लंकावतार तथा वसुदेवहिण्डि जैसे ग्रंथों में प्रशान्तमहासागरीय द्वीपों का रोचक विवरण प्राप्त होता है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

चम्पा जो कि वर्तमान वियतनाम के नाम से जाना जाता है में सम्राट श्रीमार ने फूनान अथवा कम्बुज में, कौण्डिन्य प्रथम ने तथा यवद्वीप (जावा) में सम्राट पूर्णवर्मा ने ईसा की प्रारम्भिक शती में ही भारतीय उपनिवेश की स्थापना की, यह एक प्रामाणिक तथ्य है। ये भारतीय उपनिवेश चाहे शैवमत के पोषक रहे हों, चाहे वैष्णव मत के या फिर सौगत मत के ही– रामकथा इन सबकी मूल आधारशिला थी। जावा तथा बाली द्वीप की रामकथा रामायण ककविन्, मलेशिया (कयह द्वीप) की रामकथा 'हिकायत महाराज राम', थाइलैण्ड की रामकथा 'रामकियेन्', लाओस की रामकथा 'फॉ लॉक–फॉ लॉम' (प्रिय लक्ष्मण–प्रिय राम) तथा सिंहलद्वीप की रामकथा 'रामकेति' की कालजयी सर्जना ने उन राष्ट्रों की शासनसत्ता एवं संस्कृति को ऐसा सम्बल प्रदान किया, जो तब से लेकर आज तक अक्षुण्ण है।

सुखोदय तथा द्वारावती के अनन्तर जिस 'अयोध्या' नामक साम्राज्य की स्थापना दक्षिणी श्याम में हुई थी, वह आज भी थाई राजतंत्र के रूप में अपनी गरिमा को अक्षत बनाये हैं। 'अयुध्या' के प्रति थाईवासियों की आज भी अपार आस्था एवं श्रद्धा है। थाई नरेश आज भी स्वयं को 'राम' कहने में गौरव का अनुभव करते हैं। इस प्रकार 'रामायण–संस्कृति' थाई राष्ट्रीय परिवेश में सर्वथा जीवन्त है। यवद्वीप में महाकवि योगीश्वर ने रामायण ककविन् की रचना मतरामवंशी नरेश चतुकुर बलितुंग के शासनकाल में, नवीं शती ई0 के अन्तिम चरण में की। इस विलक्षण कृति में 26 सर्ग तथा 2778 श्लोक कविभाषा में लिखे गये हैं। कविभाषा स्थानीय मलय एवं संस्कृत का सम्मिश्रण है। कवि योगीश्वर ने मालिनी, उपजाति, स्रग्धरा, सुवदना, वसन्ततिलका आदि संस्कृत छन्द–शब्दों का ही प्रयोग किया है तथा पदे–पदे प्रकरणवक्ताओं का समावेश किया है, जो निश्चय ही मनोमुग्धकारी है।

रामायणककविन् में वर्णित रामकथा का ही शिल्पांकन मध्यजावा के जगत्प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप चण्डी बोरोबुडुर तथा प्राम्बनान के त्रिदेवमन्दिरों की दीवारों पर किया गया है। प्राम्बनान के शिवमन्दिर की भित्तियों पर 42 फलकों पर रामकथा की प्रारम्भ से सागरातिक्रमण तक की घटनाएँ महाशिल्पी गुणधर्म द्वारा महाराज दक्षोत्तम (903–18ई0) के संरक्षण में उत्कीर्ण की गईं। बोरोबुडुर का रामकथांकन (780ई0) मुख्यतः दशरथ–जातक के आधार पर किया गया है। मजपहितवंशी चक्रवर्ती जावानरेश राजसनगर (1350–89 ई0) के संरक्षण में भी पूर्वी जावा में निर्मित पन्तरण अथवा पलह के शिव मन्दिर में लंका स्थित हनुमान तथा कुम्भकरण के रूप उत्कीर्ण हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

लाजोस की रामकथा 'फा लॉक–फा लॉम' (प्रिय लक्ष्मण–प्रिय राम) के भी दो रूप हैं– वाङ्मय रूप तथा शिल्पात्मक रूप। सारी रामकथा को लाओस के प्राचीन राजमहल की दीवारों पर उत्कीर्ण कर दिया गया। इसी प्रकार कटाहद्वीप (वर्तमान मलेशिया) तथा कम्बुज में भी रामकथा का भरपूर प्रचार–प्रसार है।

बालीद्वीपवासी आज भी विश्वास करते हैं कि उनके द्वीप का नामकरण वानरराज बाली के नाम पर आधारित है, जो कि त्रेतायुग में देवराज इन्द्र के अंश से उत्पन्न हुआ था।[3] सुग्रीव से वैर होने पर बाली इन प्रशान्तमहासागरीय द्वीपों में उसे खोजता फिरा था। उसके बल का प्रमाण यही था कि वह पर्वत शिखरों को हवा में उछालकर उन्हें हथेली पर थाम लेता था। बाली सूर्योदय से पूर्व ही दक्षिण समुद्र से उत्तर तक तथा पूर्व समुद्र से पश्चिम तक घूम आता था।[4] यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि समूचे इण्डोनेशियाई द्वीपों में (संख्या 13677 द्वीप) मात्र बाली में ही भयावह आकृति के असंख्य वानर हैं। बाली प्रान्त के शासन द्वारा संरक्षित सांगेह आदि 'वानरवनी' (Monkey Forests) को देखने के लिये पर्यटकों की भारी भीड़ प्रतिदिन जमा होती है।

मध्यजावा के प्राचीन नगर योग्यकर्ता(जकार्ता) से प्रायः सत्रह किमी0 दूर पूर्व दक्षिण दिशा में 'किष्किन्धा' (Kiskindha Cave) है, जो चूने के सफेद पत्थरों (Lime Stomes) से भरी हुई है।

वस्तुतः सुदूर पूर्व स्थित वे समस्त द्वीप रामकथामय हैं। रामकथा इन द्वीपों में काव्य, नाट्य प्रस्तुति (वायांग) स्थापत्य, आलेख्य(Architecture and Paintings) वस्त्राभूषण (वाटिका आदि) तथा काष्ठकला के रूप में आज भी, भारत से भी कहीं अधिक जीवन्त तथा प्रभावी है। वर्तमान इण्डोनेशिया, यद्यपि मुस्लिममतानुयायी है– तथापि उसने अपनी प्राचीन रामायण–महाभारत–संस्कृति को जीवित रखा है। रामकथा का मंचन इनका राष्ट्रीय पर्व है। शासन की ओर से प्रतिवर्ष निश्चित कार्यक्रमानुसार यह रामलीला प्राम्बनान के शिवमन्दिर–प्रांगण में तथा सोलों नगर में निरन्तर दो महीने अभिनीत की जाती है। इस्लामी प्रत्यभिज्ञान के बावजूद भी इण्डोनेशियावासियों को अपने अतीत 'हिन्दुत्व' का अभिमान है और वे बड़ी निष्ठा के साथ कहते भी हैं– We have changed our caps, but not our hearts (हमने अपनी टोपियाँ भर बदली हैं, हृदय नहीं)। रामकथा में उल्लिखित पात्र, स्थान, नदी, पर्वत, एवं अन्यान्य उपादान तो सम्पूर्ण बृहत्तर भारत–क्षेत्र में आज भी उपलब्ध हैं। सरयू, अयोध्या, किष्किन्धा, सीता, राम आदि सभी उनके जनजीवन में व्याप्त हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

रामकथा की व्यापकता के उपर्युक्त प्रमाण किसी न किसी रूप में आज भी सुरक्षित हैं, फलतः उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। परन्तु यदि हम प्रकीर्ण अथवा गौण स्रोतों को भी रामकथा की व्यापकता का प्रमाण मानें तो निस्सन्देह हमें मंगोलिया तथा अनेक यूरोपीय राष्ट्रों मे भी रामायण–संस्कृति का वर्चस्व स्वीकार करना पड़ेगा। ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री–प्रणीत रामायणमीमांसा तथा फादर कामिल बुल्के के आलेख का मैं पुनरावृत्तिभय से, मात्र उल्लेख कर रहा हूँ।

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त अध्यात्मरामायण, योगवासिष्ठ, भुशुण्डिरामायण पुराण एवं महाभारत वर्णित रामकथाएँ, रघुवंश–रामचरित–जानकीहरण–सेतुबन्ध, भट्टिकाव्य (रावणवध) सीताचरित–जानकीजीवनम्–सीतारामविहारकाव्य आदि संस्कृत महाकाव्य वैदिक परम्परा की रामकथा का अनुमोदन करते हैं। इसी प्रकार अभिषेकनाटक, प्रतिमानाटक (भासप्रणीत) महावीरचरित, उत्तरामचरित (भवभूति), अनर्घराघव (मुरारि), बालरामायण (राजशेखर), कुन्दमाला (दिङ्नाग), प्रसन्नराघव (जयदेव), आश्चर्यचूणामणि (शक्तिभद्र), अद्भुतदर्पण (महादेव) आदि संस्कृत नाटक, भोज–प्रणीत चम्पूरामायण, क्षेमेन्द्रप्रणीत रामायणमंजरी तथा अनेक रामकथापरक लघुकाव्य (रामभद्रदीक्षित) आदि की कृतियाँ उपर्युक्त परम्परा का ही समर्थन करती हैं। ये सभी कृतियाँ–वाल्मीकि सम्मत रामकथा को ही पल्लवित करती हैं।[5]

लोकगीतों की रामकथा तो भावसंवेदना की दृष्टि से विलक्षण ही है। वनवासी राम के लिए माता कौशल्या की वेदना, निर्वासिता सीता का स्वाभिमान, दशरथ की पुत्रहीनता की पीड़ा तथा राम एवं सीता के प्रति कैकेयी का मरणान्तक ईर्ष्या–द्वेष का भाव–इन प्रसंगों का जैसा रसगर्भनिर्भर वर्णन अवधी लोकगीतों (Folk Songs) में मिलता है, उसकी तुलना में वाल्मीकि रामायण के वे ही सन्दर्भ नीरस एवं महत्वहीन प्रतीत होते हैं। वस्तुतः इसका कारण हैं लोकगीतकारों की उदग्र कवित्वप्रतिभा।

वास्तव में, रामकथा की व्यापकता और उसकी प्रसिद्धि कथा को अतिशय लोकप्रियता प्रदान करती है। विश्व के अनेक देशों में रामकथा के सूत्र किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि रामकथा का जो स्वरूप भारतवर्ष में पाया जाता है, वह भारतेतर अनेक देशों में उस रूप में नहीं मिलता।[6] परन्तु, यह ध्रुव सत्य है कि रामकथा विश्वव्यापी, अनन्त है। प्रातः स्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास जी की यह अर्द्धाली रामकथा की व्यापकता को नितान्त सार्थक रूप में व्यक्त करती है– ''हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता''

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

संदर्भ ग्रंथ–

1. श्रीमद्भगवतो रामभद्रस्य कियान् शासनकालः?

संगमनी 26/1 अंक, 1996 ई0, दारागंज, इलहाबाद।

2. History of Ancient Egypt by George Robinson, 1881.

3. 'वानरेन्द्र महेन्द्राभमिन्दों वालिनमात्मजम्
सुग्रीवं जनयामास तपनस्तपतां वटः।।' रामा0बा0 27.20

4. 'समुद्रात्पश्चिमात्पूर्वं दक्षिणादपि चोत्तरम्।
कामत्यनुदिते सूर्ये बाली व्यपगतक्लमः।।
अग्रागयारुह्य शैलानां शिखराणि महानयपि।
ऊर्ध्वमुत्पात्य तरसा प्रतिगृहणाति वीर्यवान्।।' रामा0 किष्किन्धा0 11.4.5

5. रामकथा की व्यापकता–डॉ0 बलदेव प्रसाद मिश्र, पृष्ठ–154.

6. विदेशों में रामकथा का प्रवाह–डॉ0 ब्रजवासी लाल श्रीवास्तव, पृष्ठ–97.